क्रिस्मस मुबारक

क्रिस्मस मुबारक

krismas mubārak

Happy Christmas
(Urdu—Hindi script)

© 2019 D. Denness
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

दुनिया के
करोड़ों लोग
क्रिस्मस 25 दिसंबर
को मनाते हैं। क्यों? बड़ा
खाना, क्रिस्मस दरख़्त, क्रिस्मस
बाबा, चमकदार रौशनियाँ, तोह्फ़े,
सजावट, चरनी में बच्चा, वग़ैरा। यह कितना
अजीब मजमुआ है! इसका क्या मतलब है?
क्या यह सिर्फ़ एक रस्मी तहवार है या ख़ुदा के
एक सच्चे वाक़िये की
याददिहानी?

क्रिस्मस हज़रत ईसा अल-मसीह की ईदे-विलादत है। यह ईसाइयों की बड़ी ईद है। अल-मसीह दो हज़ार साल पहले पैदा हुए। इसके बाद बहुत सारे मुख़तलिफ़ रुसूम वुजूद में आईं। लेकिन असल बात क्या है? आइए हम क्रिस्मस के उन सच्चे वाक़ियात पर ध्यान दें जो इंजील शरीफ़ में बयान किए गए हैं।

फ़रिश्ता

ख़ुदा ने अज़ीम फ़रिश्ते जिबराईल को कुँवारी बीबी मरियम के पास भेज दिया। उसने बीबी मरियम से कहा, “ऐ ख़ातून जिस पर रब का ख़ास फ़ज़ल हुआ है, सलाम! रब तेरे साथ है। तू उम्मीद से होकर एक बेटे को जन्म देगी। तुझे उसका नाम ईसा (नजात देनेवाला) रखना है। वह अज़ीम होगा और हमेशा तक हुकूमत करेगा। उसकी सलतनत कभी ख़त्म न होगी।”

बीबी मरियम

बीबी मरियम बहुत घबरा गईं और न समझीं। उन्होंने पूछा, “ये क्योंकर हो सकता है? अभी तो मैं कुँवारी हूँ।”

फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “रूहुल-क़ुद्स तुझ पर नाज़िल होगा, अल्लाह तआला की क़ुदरत का साया तुझ पर छा जाएगा। इसलिए यह बच्चा क़ुद्दूस होगा और अल्लाह का फ़रज़ंद कहलाएगा।”

तब बीबी मरियम पर यह हक़ीक़त खुल गई कि यह बेटा जिस्मानी ताल्लुक़ से नहीं होगा। यह रुहानी ताल्लुक़ का बयान है।

हज़रत यूसुफ़

बीबी मरियम की मंगनी एक नेक शख़्स से हुई थी जिन-का नाम हज़रत यूसुफ़ था। जब उन्होंने सुना कि बीबी मरियम हामिला हैं तो वह परेशान हो गए और ख़ामोशी से यह रिश्ता तोड़ने का इरादा कर लिया। फिर रब के फ़रिश्ते ने उन्हें ख़्वाब में कहा, “मरियम से शादी करके उसे अपने घर ले आने से मत डर, क्योंकि पैदा होनेवाला बच्चा रूहुल-क़ुद्स से है। उसके बेटा होगा और उसका नाम ईसा रखना, क्योंकि वह अपनी क़ौम को उसके गुनाहों से रिहाई देगा।”

अब हज़रत ईसा अल-मसीह की ज़िंदगी का मक़सद भी ज़ाहिर हो गया।

शहर बैत-लहम

उन ऐयाम में शहनशाह ने फ़रमान जारी किया कि पूरी सलतनत की मर्दुमशुमारी की जाए। हर किसी को अपने वतनी शहर में जाना पड़ा ताकि वहाँ रजिस्टर में अपना नाम दर्ज करवाए। बीबी मरियम और हज़रत यूसुफ़ भी अपने शहर बैत-लहम को गए। बच्चे की पैदाइश होनेवाली थी, लेकिन वहाँ पहुँचकर उन्हें सराय में रहने की जगह न मिली। इसलिए जब हज़रत ईसा पैदा हुए तो उन्होंने उन्हें कपड़ों में लपेटकर एक चरनी में लिटा दिया, उस जगह में जिस में जानवरों का चारा डाला जाता था।

चरवाहे और भेड़ें

हज़रत ईसा शहर बैत-लहम में पैदा हुए। उस रात कुछ चरवाहे क़रीब के खुले मैदान में अपने रेवड़ों की पहरादारी कर रहे थे। अचानक एक फ़रिश्ता उन पर ज़ाहिर हुआ, और उनके इर्द-गिर्द रब का जलाल चमका। यह देखकर वह सख़्त डर गए। लेकिन फ़रिश्ते ने उनसे कहा, "डरो मत! देखो मैं तुमको बड़ी ख़ुशी की ख़बर देता हूँ जो तमाम लोगों के लिए होगी। आज ही बैत-लहम में तुम्हारे लिए नजातदहिंदा पैदा हुआ है यानी मसीह ख़ुदावंद। और तुम उसे इस निशान से पहचान लोगे, तुम एक शीरख़्वार बच्चे को कपड़ों में लिपटा हुआ पाओगे। वह चरनी में पड़ा हुआ होगा।"

फ़रिश्ते

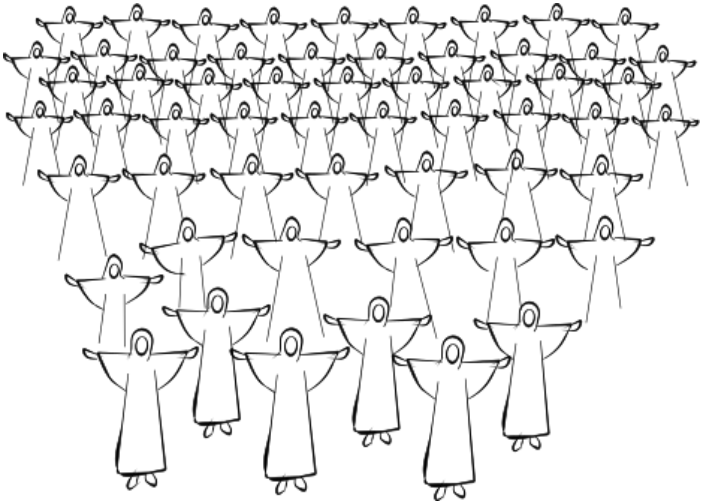

अचानक आसमानी लशकरों के बेशुमार फ़रिश्ते उस फ़रिश्ते के साथ ज़ाहिर हुए जो अल्लाह की हमदो-सना करके कह रहे थे, “आसमान की बुलंदियों पर अल्लाह की इज़्ज़तो-जलाल, ज़मीन पर उन लोगों की सलामती जो उसे मंज़ूर हैं।”

चरनी

फ़रिश्ते उन्हें छोड़कर आसमान पर वापस चले गए तो चरवाहे भागकर बैत-लहम पहुँचे। वहाँ उन्हें बीबी मरियम और हज़रत यूसुफ़ मिले और साथ ही छोटा बच्चा जो चरनी में पड़ा हुआ था। यह देखकर उन्होंने सब कुछ बयान किया जो उन्हें उस बच्चे के बारे में बताया गया था। जिसने भी उनकी बात सुनी वह हैरतज़दा हुआ।

मौऊदा मसीह

ये सब कुछ इसलिए हुआ कि जो अल्लाह ने नबियों की मारिफ़त कहा था वह पूरा हो:

जो कुछ उस हस्ती के बारे में फ़रमाया गया, वह हैरानकुन था। उन्होंने फ़रमाया कि वह हमसे बिलकुल फ़रक़ होंगे। फ़रिश्ते ने कहा था कि उनका नाम इम्मानुएल रखना जिसका मतलब "ख़ुदा हमारे साथ" है।

रौशन सितारा

जब हज़रत ईसा अल-मसीह पैदा हुए तो आसमान पर एक ख़ास सितारा नज़र आया। मशरिक़ के कुछ आलिमों ने यह देखकर पहचान लिया कि यह एक ख़ास निशान है, कि एक ख़ास बादशाह पैदा हो गया है। ऐसा बादशाह जिसकी बड़ी इज़्ज़त और परस्तिश करने की ज़रूरत है।

मजूसी

इन बड़े आलिमों यानी मजूसियों ने लंबा सफ़र शुरू किया। सितारा उनके आगे आगे गया। मजूसी उसके पीछे पीछे चलते गए। आख़िर में सितारा उस जगह के ऊपर ठहर गया जहाँ हज़रत ईसा अल-मसीह मौजूद थे। मजूसियों ने उस घर के अंदर जाकर बीबी मरियम और बच्चे को देखा। वह निहायत ख़ुश हो गए और हज़रत ईसा अल-मसीह के आगे गिरकर सिजदा किया। उन्होंने अपने डिब्बे खोलकर ख़ास और क़ीमती तोह्फ़े उनको दिए।

तोहफ़े

जैसे मजूसियों ने तोह्फ़े दिए वैसे ही क्रिस्मस पर लोग एक दूसरे को तोह्फ़े देते हैं। हज़रत ईसा के पैरोकार इसलिए ख़ुशी मनाते हैं कि अल्लाह ने इनसान को एक नजात देने-वला दिया जो हमें गुनाह, बुराई और ख़ौफ़ की दलदल से निकाल सकता है।

ख़ुशख़बरी का शुरू

यह कैसा वाक़िया है! फ़रिश्ते, ख़्वाब, एक ख़ास सितारा, एक ग़रीब कुँवारी और उसका मंगेतर, अमीरो-ग़रीब, तालीमयाफ़्ता और अनपढ़, यह सब मिलकर इस मोजिज़ाना पैदाइश पर रौशनी डालते हैं। क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा की पेशगोइयाँ पूरी हो गईं। हज़रत ईसा अल-मसीह के आने के मक़सद का एलान हो गया।

? ? ?

अब मेरी ज़िंदगी से अल-मसीह की पैदाइश क्या ताल्लुक़ रखती है? क्या वाक़ई वही हमें गुनाह की गिरिफ़्त से निकाल सकते हैं? क्या वह मौत का ज़ोर ख़त्म कर सकते हैं? यह हस्ती कौन है? जब वह बड़े हो गए तो उन्होंने अपने बारे में क्या फ़रमाया? यह मज़ीद तफ़सील के साथ इंजील शरीफ़ में बयान किया गया है।

इसको पढ़ो!

ये सारी बातें इंजील जलील में पढ़े जा सकते हैं: इसके लिए देखिए मत्ती और लूक़ा के पहले 2 अबवाब।

क्रिस्मस की ख़ुशी
और इतमीनान
आपको हासिल हो!